# अव्यक्तमूर्त की श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ मत ( For PBKs)

वी.सी.डी. नं. 2238 प्रातः क्लास 01.11.1966 व्याख्या ता. 28.09.2016

अपन को अगर सरेण्डर समझते हैं या सरेण्डर हैं, तो सरेण्डर होने वालों के लिए क्या ज़रूरी है? पूरा तन अर्पण करना पड़े। "जो सम्पूर्ण समर्पण हुए हैं उन्हों को यह भी पोतामेल निकालना चाहिए। तन भी कहाँ और कैसे लगाया?" (अ.वा. 28.11.69 पृ.148 अंत) ऐसे नहीं कि ये नहीं हो सकता, वो नहीं हो सकता। तब बाप का कहना होता है, उलहेना देना होता है कि ये अच्छी रही भक्तों की बात कि तेरा सो मेरा सब-कुछ; लेकिन मेरे को हाथ नहीं लगाना! वाह भाई! तेरा घर मेरा, तेरा सब-कुछ मेरा। वो तो विश्व का पिता है, सारी दुनियाँ का पति है, विश्वपति भी है। तो उसका सब-कुछ तेरा और वो जब संबंध जोड़ने की बात करे, तो इन्कार कर दे, तो क्या कहेंगे कि संपूर्ण अर्पण हुआ या नहीं हुआ? नहीं अर्पण हुआ। तो बताया कि शरीर रूपी जो धनुष है, इतना लचीला होना चाहिए कि जैसे वो चलाना चाहे वैसे चलाए, ऐसी मोल्डिग पावर आ जाए। तो उसे चाप/धनुष कहा गया है। उसे शास्त्रों में जहाज भी कहा गया है। झाड़ के चित्र में कोई चित्र ऐसा है जो 500-700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ मन-बुद्धि से उसका आधार लेती हैं? अगर आधार न लेंगी, तो इस दुख-दर्दों की दुनिया से पार नहीं जा सकतीं। वो तन, वो चेहरा उन 500-700 करोड़ की बुद्धि में रहता है; क्योंकि 500-700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ निराकार को याद करके पार जाएँगी या साकार को याद करके पार जाएँगी? (सभी ने कहा- साकार को) क्या करना सहज है? साकार को याद करना सबके लिए सहज है; क्योंकि अनेक पिछले जन्मों का अभ्यास पड़ा हुआ है। इसीलिए 500-700 करोड़ जो भी मनुष्य-आत्माएँ हैं, वो सब सृष्टि रूपी वृक्ष के ऊपरी हिस्से में जो शंकर को दिखाया गया है; दिखाया गया है कि नहीं? सभी आत्माएँ, 500-700 करोड़ पत्ते इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपने शरीर को छोड़ करके परमधाम जाते हैं। तो कहाँ से हो करके गुजरते हैं? किसकी याद में गुजरते हैं? (किसी ने कहा- शंकर की) उसी विश्वपिता, उसी मनुष्यों के पिता की याद में जाते हैं, जिस पिता में वो सुप्रीम सोल प्रवेश करके उसको आप समान निराकारी शिव ज्योतिबिंदु बनाकर जाता है। आप समान माने निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बनाकर जाता है। इसीलिए उसको मुसलमान लोग आज भी कहते हैं- 'अल्लाह' माने ऊँचे-ते-ऊँचा; ऊँचा तेरा काम, ऊँचा तेरा नाम, ऊँचा तेरा धाम। काम कैसे? नाम काम के आधार पर पड़ते हैं या बिना काम किए नाम पड़ जाएँ? शास्त्रों में तो जितने नाम हैं, वो सब काम के आधार पर ही पड़ते हैं। तो सबसे बड़ा काम, वो शरीरधारी जो झाड़ के ऊपर बैठा हुआ है, उसने क्या काम किया जो कोई भी धर्मपिता ने नहीं किया ? इब्राहीम-बुद्ध-क्राइस्ट बड़े-2 धर्मपिताएँ हुए, कोई ने नहीं किया। (किसी ने कहा- पुरानी धारणाएँ बनाईं) हाँ, पुरानी परम्पराओं का, पुराने जो धर्म हैं, पुराने धर्म की जो धारणाएँ हैं, उनका मुकाबला किसी धर्मपिता ने नहीं किया। इस सृष्टि रूपी

रंगमंच पर एक ही वो आत्मा है। जब शिव बाप उस तन में आते हैं, तो वो ऐसा काम करने के लिए तैयार होती है, जो काम किसी भी धर्मपिता ने नहीं किया- पुरानेपन को नष्ट करना और नए धर्म की रचना करना। पुराने दुनिया के धर्मों या परम्पराओं का विनाश किया किसी ने? पुराना घर गिराया? नहीं गिराया। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो भी धर्मपिताएँ आए, उन्होंने पुरानी दुनिया गिरा करके नया मकान नहीं बनाया; वो सिर्फ पुराने मकान को ही थोप-थाप करते रहे, रिपेयरिग करते रहे।

तो देखो, ये दो आत्माएँ हैं, जिन्हें हम आत्मिक स्थिति के रूप में कहेंगे- 'बापदादा'। कौन? बापदादा- आत्माओं का बाप 'बाप' और आत्मा रूपी जो बच्चे हैं, भाई-2, उनके बीच में सबसे बड़ा बच्चा कौन हुआ? दादा हो गया। वो सुप्रीम सोल बाप और हम सब बच्चे आपस में भाई-2 और उन भाइयों में सबसे बड़ा बच्चा, (किसी ने कहा- दादा) मनुष्य-सृष्टि का जो बाप है; लेकिन क्या सुप्रीम बाप है? सुप्रीम बाप तो नहीं, उसका भी कोई बाप है। तो जो आत्माओं के बीच में बड़ा भाई है, बड़ा भाई होने के नाते हमारा दादा हो गया। कहते भी हैं- 'ज़्यादा दादागिरी दिखाते हो!' कहते हैं ना! क्योंकि बड़ा भाई है तो बड़प्पन तो आएगा ही। देह वाला है या बिना देह वाला है? (सभी ने कहा- देह वाला है) इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट बजाता है तो देह वाला तो होगा ही। तो वो जो देहधारी मनुष्यों का बाप है, वो बड़ा भाई होने के कारण; कहा भी गया है- बड़ा भाई किसके समान होता है? बाप समान होता है। तो वो बाप समान का पार्ट बजाता है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर शिव सुप्रीम बाप उस आत्मा को जब शरीर के सहित स्वीकार करते हैं, तो सर्व सम्बन्ध पहले उसके साथ हैं, उसके बाद औरों के साथ हैं, नम्बरवार हैं। वो सुप्रीम सोल जो है, वो भी 'बाप' है और जिसमें प्रवेश करता है, वो भी मनुष्य-सृष्टि का बड़ा भाई होने के कारण 'बाप' है। वास्तव में एवरलास्टिग बाप नहीं है। तो देखो, जिसे हम बापदादा कहते हैं, भक्तिमार्ग में भक्तों ने उसे कम्बाइण्ड रूप दिखा दिया है; काहे का? माता और पिता का कम्बिनेशन अर्धनारीश्वर दिखाया है- 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'। त्वम् माना 'एक'। संस्कृत में त्वम्, एक को कहा जाता है; युवाम, दो को कहा जाता है; यूयम, अनेक को कहा जाता है। तो जो श्लोक बना हुआ है, उसमें क्या कहते हैं- त्वमेव माता च पिता वगैरह-वगैरह। तो वो माता भी है और पिता भी है। माता को आगे रख दिया। क्यों आगे रख दिया ? भगवान ने उस पाँच तत्वों के चोले में प्रवेश किया, जिसने माता का रूप धारण किया, जिसमें देहभान होता ही है; होता है या नहीं? (किसी ने कहा-है) 500-700 करोड़ के बीच में सबसे ज़्यादा है या मीडियम है या कम है? सबसे जास्ती। तो जैसे माताओं में देहभान होता है, ऐसे उस देहभान वाले रथ को सुप्रीम सोल ने कैच कर लिया। तो बताओ, प्यार का प्यासा कौन हुआ? प्यासा कुएँ के पास जाता है या कुआँ प्यासे के पास जाता है? नियम क्या है? प्यासा कुएँ के पास जाता है। तो उन दोनों आत्माओं के बीच में एक मनुष्यों का पिता कहा जाता है- ऐडम/आदम/आदिदेव/आदिनाथ। एक-जैसे नाम हैं। उस आत्मा

और सुप्रीम सोल, जो आत्माओं का बाप है, वो भी सोल है, उन दोनों सोल्स/आत्माओं के बीच में आगे किसे रखा जाए? (किसी ने कहा-शिव सुप्रीम सोल को) शिव तो वैसे भी इस सृष्टि पर जब आता है तो बच्चों के सामने नमस्ते करता है। जो भी बच्चे हैं, सबके सामने झुकता है या नहीं झुकता है? झुकता है। ब्रह्मवाक्य मुरली में भी अंत में क्या बोलते हैं? (सभी ने कहा-रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।) और उससे पहले? मात-पिता, बापदादा का यादप्यार। नमस्ते क्यों नहीं? (किसी ने कहा- देहभान है) हाँ, क्योंकि मात-पिता के रूप में जब मात-पिता बनते हैं, तो मात-पिता का धर्म नहीं है कि जो अपनी रचना है, उस रचना के सामने झुक करके रहें। रचयिता को रचना के कंट्रोल में रहना है या उसको कंट्रोल करना है? (किसी ने कहा- कंट्रोल करना है) रचयिता को कंट्रोलर बन करके रहना है। अगर उल्टा कर दे तो क्या होगा? माता-पिता दोनों ही रचयिता हैं कि नहीं? (सभी ने कहा- दोनों ही रचयिता) आज दुनिया में क्या है- माताएँ बच्चों की रचयिता हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा- हैं) माताओं का हाल क्या है? दुनिया की सारी माताएँ बच्चों के कंट्रोल में आ गईं। क्यों कंट्रोल में आ गईं? क्या भगवान ने भी कोई ऐसा पार्ट बजाया? हाँ, भगवान ने भी ऐसा पार्ट बजाया। अरे, दादा लेखराज ब्रह्मा तो बाद में ब्रह्मा है। ब्रह्मा पहला ब्रह्मा है? 'परम्ब्रह्म' ब्रह्मा दादा लेखराज को कहें? (किसी ने कहा- नहीं) कौन है परम्ब्रह्म? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) प्रजापिता परम्ब्रह्म है। तो जिस परम्ब्रह्म में, बड़े-ते-बड़ी माँ जिसको हम कहें, जिसके लिए शास्त्रों में गायन है- "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परम्ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥" उस परम्ब्रह्म गुरु को नमन करता हूँ और ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को नमन नहीं करता हूँ। झुकना है, ये सर है, जिसमें ये बुद्धि है, जिसमें से ये मत निकलती है, मति माने 'बुद्धि', किसके सामने झुकानी है? (किसी ने कहा- परमात्मा के सामने) दुनिया में तो ऐसे देखा जाता है- भक्त, हनुमान के सामने झुक जाते हैं; हनुमान, राम के सामने झुक जाते हैं; राम, शंकर के सामने झुक जाते हैं और शंकर, शिव के सामने झुक जाते हैं। तो आखिर करना क्या चाहिए? अरे, ऊँच-ते-ऊँच के सामने झुकना है या बिचौलियों के सामने झुकना है? (किसी ने कहा- ऊँच-ते-ऊँच के सामने) गीता में भी बोला है- "भूतों के पुजारी भूत-प्रेतों से प्राप्ति करते हैं, देवताओं के पुजारी देवताओं से प्राप्ति करते हैं और मेरे भक्त मेरे से प्राप्ति करते हैं।" (गीता 9/25) तो ऊँच-ते-ऊँच जो बुद्धि है, बुद्धि माने आत्मा, जो ऊँच-ते-ऊँच है, उसी को पकड़ना चाहिए ना! कि नीच भी मिल जाए तो ही ठीक है? 63 जन्म तो ऐसा ही करते रहे। कैसा? भारतवासी तो खास, जो गुरु मिल गया, जो गुरु सामने आया- सत्य वचन महाराज, ठीक है कृपा निधान, सत्य है दया निधान। अभी क्या कर रहे हैं? अरे, अभी सब दीदी, दादी, दादाओं आदि की बातें मान लेते हैं या भगवान की मत से टैली करते हैं? नहीं टैली करते हैं, सबसे प्रभावित हो जाते हैं। तो जब सबसे प्रभावित हो जाते हैं तो हम गलती करते हैं कि नहीं? ऊँच-ते-ऊँच भगवान की मत पकड़नी चाहिए।

भगवान तो स्वयं कहते हैं- "मामेकम् याद करो।" याद किसको करते हैं? याद किसको किया जाता है? जो सुख देता है, उसे याद किया जाता है। सारी दुनियाँ जानती है कि सारी दुनियाँ में सबसे जास्ती कौन किसको याद करते हैं! अरे, सारी दुनियाँ भगवान को ही तो याद करती है- अंग्रेज़ हैं तो सुप्रीम गॉडफादर को याद करते हैं, मुसलमान हैं तो अल्लाह मियाँ को याद करते हैं, हिंदू हैं तो भगवान को याद करते हैं। ऊँच-ते-ऊँच को ही याद करते हैं। तो अभी हम बच्चों को भी क्या करना चाहिए? (सभी ने कहा- ऊँच-ते-ऊँच को याद) और ऊँच-ते-ऊँच कब याद आएगा? (किसी ने कहा- आत्मिक स्थिति) जैसे माँ है, बच्चे की किलकारियाँ, बच्चे की बातें याद करती रहती हैं। माँ को सुख मिलता है कि नहीं? सुख मिलता है तो याद करती है। तो ऐसे ही, भगवान की जो वाणी है, वो घड़ी-2 याद आनी चाहिए या नहीं आनी चाहिए? (किसी ने कहा- आनी चाहिए) तो हमें क्या करना है? इसने जो कुछ बोला है वो भगवान के बोले हुए के अनुकूल है या नहीं है? बाबा तो सारी पढ़ाई पढ़ा देते हैं। मुरली में ही बोल दिया- ''बी०के० की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा राँग है? तुम बच्चों को राइट और राँग समझ भी अभी मिली है।'' (मु०27.1.95 पृ०3 मध्य) इसका मतलब ये हुआ कि ब्रह्माकुमारियाँ भी राँग मत दे देती हैं। उनको देह है कि नहीं? (किसी ने कहा- है) देहभान है कि नहीं? तो देहभान में आ करके माया उल्टा कर्म कराएगी या नहीं? कराती है। इसीलिए ऊँच-ते-ऊँच को पकड़ना है। ऊँच-ते-ऊँच कौन है? (किसी ने कहा- शिवबाबा) हाँ, ऐसे नहीं कह सकते कि ऊँच-ते-ऊँच शिव है। ऊँच और नीच का सवाल इस साकारी सृष्टि पर साकार पार्ट बजाते हैं तब होता है या निराकारी दुनिया में जहाँ आत्माएँ निराकार रूप में रहती हैं, वहाँ होता है? साकारी दुनिया में होता है। निराकार भगवान भी इस सृष्टि पर जब आता है, निर्गुण-निराकार जिसे कहा जाता है, तो वो भी जब साकार बनता है तब ही तो मत देता है। बिना साकार बने मत देता है? साकार बन करके ही मत देता है। तो घड़ी-2 टैली करना है कि हम ऊँच-ते-ऊँच बाप की मत ले रहे हैं या देहधारी से प्रभावित हो गए।

ब्रह्मा को क्या कहेंगे- देहधारी कहेंगे या सदैव आत्मा-अभिमानी कहेंगे? देहधारी कहेंगे। देहधारी है तो मुरली के बरखिलाफ मत दे देता है। जैसे मुरली में कहा- शादी बर्बादी। "शादी बरबादी कहा जाता है।" (मु.ता.3.12.74 पृ.3 मध्यादि) बाबा ने बच्चों को क्या डायरैक्शन दे दिया? कोई बच्चे गए- बाबा, हम शादी कर लें? हमारे घर के सम्बन्धी, माँ-बाप बहुत विरोधी हैं और वो कन्या है, वो भी ज्ञान में चलती है, उसके माँ-बाप भी बहुत विरोधी हैं। तो क्या हम गंधर्वी विवाह कर लें? तो बाबा ने बहुतों को स्वीकृति की मत दिया या नहीं दिया? दिया। शादी कराई या नहीं कराई? गंधर्वी विवाह कराया या नहीं कराया? कराया। तो श्रीमत के बरखिलाफ काम हुआ या श्रीमत के अनुकूल हुआ? अरे, बाबा तो कहते- कोई ऐसा बच्चा निकले जो शादी करे, साथ में रहे और पवित्र रहकर दिखाए।

तो ये ऊँची बात हुई, ऊँचा पुरुषार्थ हुआ या नीचा पुरुषार्थ हुआ? कैसा पुरुषार्थ हुआ? (किसी ने कहा- ऊँचा) जो डायरैक्शन दिया बच्चों को कि गंधर्वी विवाह कर लो, साथ में रह करके पवित्र रह करके दिखाओ, बाबा बहुत खुश होंगे, तो जो वाचा से डायरैक्शन देने का पुरुषार्थ किया, वो बाबा की मत के अनुकूल हुआ या प्रतिकूल हुआ? (किसी ने कहा- प्रतिकूल) विरोधी हुआ? मुरली में तो बोला है- "ईश्वरीय कायदे के बरखिलाफ बात की तो रावण सम्प्रदाय का ही समझो।"(मु॰24.2.69 पृ॰1 अंत) मुरली का महावाक्य है। श्रीमत किसे कहेंगे? (किसी ने कहा- श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ मत) वो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ मत कौन-से मुख से निकलती है? (किसी ने कहा- मुकर्रर रथ) 1969 में तो मुकर्रर रथ था ही नहीं, तो उनको श्रीमत नहीं मिली? (किसी ने कहा- मिली) श्रीमत जब मिली है तो उससे टैली नहीं करना चाहिए? मुरली में तो कहा है- "ऐसे थोड़े ही सब कहेंगे हम गन्धर्वी विवाह करेंगे। वह कब रह न सकें। पहले दिन ही जाए गटर में गिर पड़ेंगे।" (मु.ता.20.4.75 पृ.3 आदि) तो श्रीमत के बरखिलाफ डायरैक्शन हुआ या प्रतिकूल डायरैक्शन हुआ? (किसी ने कहा- बरखिलाफ) जैसे शिवबाबा ने कहा- "तुमको तो प्रॉपर्टी कुछ भी बनानी नहीं है। हुक्म नहीं है।" (मु.7.1.67 पृ.1 मध्य) मकान का कंस्ट्रक्शन करते हैं ना, दो-दो, चार-चार, आठ-आठ, दस-दस, बीस-बीस मंज़िल का मकान खड़ा कर देते हैं; करते हैं कि नहीं? प्रॉपर्टी बनाई या नहीं बनाई? (किसी ने कहा-बनाई) प्रॉपर्टी बना ली; क्योंकि गवर्मेण्ट भी पैसा लेगी, तो पैसा ले जाएगी; मकान, ज़मीन, जायदाद थोड़े ही ले जाएगी! तो वो प्रॉपर्टी बनाय लेते हैं। बाबा ने मना किया हुआ है- अब प्रॉपर्टी बनाने का टाइम नहीं है, प्रॉपर्टी बनाने में जो पैसा लगाएँगे, वो आगे चल करके विनाश होगा, सब खलास हो जाएगा। "किसकी दबी रही धूल में, किसकी राजा खाए, किसकी ले गई चोट्टा, किसकी आग जलाय"- ऐसा हसर होगा। तो बाबा ने तो मकान बनाने के लिए भी मना कर दिया। अब ब्रह्मा बाबा के पास लोग जाते थे। कहते- बाबा, बहुत परेशानी है! मकान एकदम जड़-जड़ीभूत हो गया है, झोपड़ी में हम लोग रह नहीं सकते, परिवार बड़ा हो गया। क्या करें बाबा? अब ब्रह्मा बाबा तो माँ का पार्ट है, माँ बच्चों का दुख देखती है? नहीं देखती है, द्रवित हो जाती है। तो परमिशन दे दी- अच्छा बच्चे, भले मकान बनाओ, एक कमरा गीता-पाठशाला के लिए छोड़ देना। मकान भी बन जाता है, सब-कुछ अच्छा हो जाता है, फिर बाद में ज्ञान ही छोड़ देते हैं। तो ये श्रीमत के बरखिलाफ मत हुई या अनुकूल हुई? बरखिलाफ हो गई। यहाँ तक बोल दिया है कि लोन भी नहीं लेना है। अब दुनिया का विनाश होने वाला है तो प्रॉपर्टी बनाने के लिए लोन लेना है? नहीं लेना। हाँ, भारत के लिए, भारतवासियों के लिए इतना कहा है कि भारत अभी विदेशों से लोन लेता रहता है। ढेर सारा लोन लिया हुआ है। ये भारत इस लोन को, जो विदेशियों से लिया है, वो चुकाय सकेगा? ऐसा टाइम आने वाला है कि न लोन लेने वाला रहेगा, न देने वाला रहेगा; इसलिए चुकाने का कोई सवाल ही नहीं। इसीलिए बाबा ने कहीं-2

मुरलियों में ये बोल दिया है कि अगर सच्चे हो, तो सच्चे बन करके लोन ले लो और सारा लोन कहाँ लगा दो? ईश्वरीय सेवा में लगा दो, तो लोन भी सफल हो जाएगा। जिनसे लिया है उनका भी कल्याण होगा और तुम बिचौलिया बन गए, तुम्हारा भी कल्याण हो जाएगा। उस हालत में बोला है। अगर झूठा काम किया, लोन तो ले लिया, महल-माड़ियाँ, मकान बनाय लिया, किराये पर उठाय दिया, खूब पैसा कमाया। अब ज़्यादा पैसा, ज़्यादा धन आ जाता है तो बुद्धि खराब हो जाती। फिर बाद में ज्ञान में चलना भी छोड़ दिया। तो क्या हाल होगा- सद्गति होगी/दुर्गति होगी? दुर्गति हो जाएगी। तो बताया कि देहभान जो है, वो दो प्रकार का है- माता का देहभान और पिता का देहभान। किसमें ज़्यादा देहभान होता है? माता में ज़्यादा। इतना ज़्यादा देहभान होता है कि मोहमयी माता इतना देहभान में आ जाती है कि अपना सुख-दुख भी भूल जाती और बच्चों के मोह में आ करके सब-कुछ अर्पण कर देती है। किसको अर्पण करना चाहिए- पति को या पुत्रों को? पति को अर्पण करना चाहिए। उल्टा कर दिया! ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई कि माताएँ, बच्चों के आधीन हो गईं? माताएँ जो बच्चों की रचयिता हैं, वो आज बच्चों के आधीन हो गईं। ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई? किसने शुरू की? (सभी ने कहा- ब्रह्मा बाबा ने) कैसे? अरे, अभी-2 बातें बताईं ना! माँ इतनी द्रवित हृदय वाली होती है कि बच्चों का दुख सुन भी नहीं सकती। इतना मोह पैदा होता है! इसलिए बाबा ने अव्यक्त वाणी में बोला- "माताएँ अगर नष्टोमोहा में पास हो गईं तो बहुत आगे नम्बर ले सकती हैं।" (अ.वा.30.11.79 पृ.74 आदि) सिर्फ एक बात- मोहजीत बने ना। तो इस बात में सब माताएँ फेल हो गईं। आज दुनिया की सारी माताएँ फेल हैं या पास हैं? सब फेल हैं। फाउंडेशन किसने डाला? ब्रह्मा बाबा ने डाला। ब्रह्मा बाबा 16 कला वाले सतयुग की कौन-सी आत्मा है? 16 कला कृष्ण की आत्मा है। कृष्ण की आत्मा में शिव ने आ करके जो पार्ट बजाया, जो शिव गीता में बोलता है- "मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।" (गीता 4/11)- मैं संगमयुग में जो पार्ट बजाता हूँ, वो पार्ट मनुष्य ज़रूर बजाते हैं। तो मनुष्यों में माताएँ आती हैं कि नहीं? माताएँ भी हैं। तो कलियुग के अंत में जब ऐसी तमोप्रधान शूटिग होती है, तो माताएँ ऐसा पार्ट बजाने लग पड़ती हैं कि बच्चे श्रीमत की बरखिलाफी भी कर रहे हैं, तो भी उनसे कुछ नहीं कहतीं, सहन करती हैं। ब्रह्मा बाबा ने भी क्या किया? (किसी ने कहा- सहन किया) हार्ट फेल कर लिया; लेकिन जिन बच्चों ने दुख दिया, सारे यज्ञ को वर्ल्ड रिन्युअल ट्रस्ट के रूप में अपने नाम से रजिस्टर्ड कराकर सारी प्रॉपर्टी अपनी मुट्ठी में कर ली, बाबा ने उन बच्चों को कुछ भी नहीं कहा। मुखिया-2 बच्चे थे, जिनको कहते हैं- दीदी, दादी, दादाएँ। बाबा ने उनको एक शब्द भी नहीं बोला। अब कोई अंदर-ही-अंदर दुख को पी जाएगा, बड़ा भारी दुःख, जिदगी का सबसे बड़ा धोखा, तो उसका हार्ट फेल होगा या नहीं होगा? हार्ट फेल हो जाएगा।

वो जो माता है, प्रैक्टिकल में जिसने माता का पार्ट बजाया। प्रैक्टिकल माना शरीर के साथ।

कौन-सा पार्ट? गीता माता। माता है या किताब है? गीता माता है। गीता माता है तो क्या विधवा है? विधवा तो नहीं होगी। सधवा होगी या विधवा होगी? भारत में तो विधवाओं को मान्यता नहीं है और गीता की तो भारत में बहुत मान्यता है, अभी भी मान्यता है। भल भारतवासी भूल गए कि हमारा धर्मपिता कौन है, हमारा धर्मग्रंथ कौन-सा है, तो भी गीता को मान देते हैं। तो गीता माता है तो गीता का पति भी होगा या नहीं होगा? अरे, दुनिया में माता का जो परिवार में संबंध होता है, तो माता के साथ कौन-सा ऐसा सम्बन्धी होता है, जो माता की रग-2/रोएँ-2 को जानता है? कोई सम्बन्धी होता है कि नहीं? कौन? पति होता है। तो गीता माता है तो गीतापति कोई है, था या नहीं था? जब डाइरैक्टर भगवान ने आ करके इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर ये 5000 वर्ष के ड्रामा की शूटिग कराई, तो गीता माता का गीतापति भी था। वो कौन? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) हाँ, 'छुपा रुस्तम बाद में खुले'। वैसे भी दुनिया में देखा जाए तो जो बच्चा माता के गर्भ से जन्म लेता है, वो पहले माता को पहचानता है या बाप को पहचानता है? माता को पहचानता है। यहाँ क्या हुआ? ब्राह्मणों की दुनिया रचने के लिए ब्रह्मा के तन में जब भगवान शिव बाप आते हैं, तो क्या होता है? जो ब्राह्मण बच्चे पैदा होते हैं, वो पहले किसको पहचानते हैं? माता को पहचानते हैं, ब्रह्मा बाबा को पहचाना। पहचाना या नहीं पहचाना? 'तू ही मेरा बाप, तू ही मेरी माँ'। वो बच्चे जो बच्चा-बुद्धि हैं, माता को ही सब-कुछ मानते हैं, वो अभी भी ब्राह्मण परिवार में हैं या नहीं हैं? हैं। अभी भी पैदा होते रहते हैं कि नहीं? अभी भी पैदा हो रहे हैं। तो उन बच्चों ने पहले माता को पहचाना। हम भी पहले बच्चे थे, ज्ञान में बच्चा-बुद्धि थे या सालिम बुद्धि/सगीर थे? बच्चा-बुद्धि थे। तो हमने पहले ब्रह्मा माँ को पहचाना या बाप को पहचाना? हमने भी पहले माँ को पहचाना। अगर इस जन्म में नहीं पहचाना, कोई-2 ऐसे बच्चे हैं जो इस जन्म में बेसिक में नहीं आए हैं, डायरैक्ट एडवांस में आ गए, तो उनके लिए ये बात लागू होगी? (किसी ने कहा- पूर्वजन्म) हाँ, जरूर पूर्वजन्म से कनेक्टेड है। पूर्वजन्म में उन बच्चों ने माँ को पहचाना था। इसलिए ये नहीं कह सकते कि वो आत्मा रूपी बच्चे माँ को पहले नहीं पहचानते। पहचाना तो, माँ को पहचाना जो दुनिया की सबसे शक्तिशाली सहनशीलता का गुण धारण करने वाली होती है। कोई आत्मा है? अगर है तो कौन-सी पार्टधारी एक आत्मा है जिसने 100 परसेण्ट सहनशीलता का पार्ट बजाया? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा) जिसके बारे में आज तक कोई ब्रह्माकुमार-कुमारी या प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी भी क्यों न हो, ये नहीं कह सकता कि ब्रह्मा बाबा से हमको सुख नहीं मिला; ब्रह्मा बाबा ने हमको दुख दिया। तो देखो, ऐसी सहनशक्ति की आगार माता और वो माता भी मोह के कारण विश्व की कल्याणकारी बनती है या अकल्याणकारी बन जाती है? (सभी ने कहा- अकल्याणकारी) हाँ, अकल्याणकारी बन जाती है और दादा लेखराज ब्रह्मा के अंदर ये सहनशीलता का पार्ट किसने बजाया- दादा लेखराज की आत्मा ने बजाया या शिव ने बजाया? शिव ने बजाया।

अगर कहें कि दादा लेखराज वाली आत्मा ने बजाया, तो 63 जन्मों में कभी क्यों नहीं बजाया? उसमें अगर ये सहनशक्ति के संस्कार थे तो 63 जन्मों में भी तो वो पार्ट बजाना चाहिए कि नहीं बजाना चाहिए? (किसी ने कुछ कहा-...) लेकिन नहीं बजाया। कब बजाया? जब वो सुप्रीम सोल आ करके उसमें माता के रूप में प्रत्यक्ष पार्ट बजाता है, तब पार्ट बजाया।

अब सवाल ये पैदा होता है कि ब्रह्मा बाबा तो माता के रूप में प्रत्यक्ष हुए। फिर पिता कौन? तो साकार सृष्टि पर साकार रूप में पार्ट बजाने वाला पिता की बात है या निराकारी आत्माओं की बात है? साकार सृष्टि में साकार रूप में पिता का पार्ट बजाने वाले की बात है। जो त्रिमूर्ति के चित्र में चित्रित है। क्या चित्रित है? शिव आते हैं तो तीन मूर्तियों के साथ आते हैं कि अकेले आते हैं? तीन मूर्तियों के साथ आते हैं। उन तीन मूर्तियों में ब्रह्मा सो क्या बनता है? विष्णु बनता है। वो तो दोनों एक ही हो गए कि अलग-2 हुए? विष्णु तो एक ही हो गया। फिर कौन रहा? तीन मूर्तियों में कौन बचा? शंकर। तो जो शंकर वाली आत्मा है, वो आत्मा ही बाप के रूप में त्रिमूर्ति के चित्र में चित्रित है। बाप कठोर/स्ट्रिक्ट होता है या माता स्ट्रिक्ट होती है? (किसी ने कहा- बाप...) तो ब्रह्मा और शंकर ये आत्माओं का साकारी मात-पिता रूप में पार्ट कैसे दिखाया जाए? कि दोनों आत्माएँ फुदुक-2 कर पार्ट बजाएँगी? देखने में आएँगी? नहीं, वो दोनों पार्टधारी अलग-2 हैं। दादा लेखराज ब्रह्मा में प्रवेश करके शिव ने जो माता का पार्ट बजाया, वो सहनशीलता का पार्ट बजाया। अभी भी बजाया, बजा रहा है। वही-2 धारणा की बातें, 70 साल हो गए, अभी भी बजा रहा है या नहीं बता रहा है? माँ की तरह बच्चों को बार-2 समझाता है या नहीं समझाता है? समझाता है। कभी बच्चों को टेढ़ा रूप धारण करके दिखाया? नहीं दिखाया। अभी भी 'त्वमेव माता' के रूप में पार्टधारी है; अभी भी पिता का कड़क पार्ट नहीं है। जो त्रिमूर्ति के चित्र में शंकर को कड़क बैठक दिखाई गई है। ब्रह्मा तो आराम से बैठे हुए हैं। तो क्या साबित होता है? ब्रह्मा का कैसा पार्ट? माता के रूप में सरल पार्ट, मृदुल पार्ट, मीठा पार्ट। सब बच्चों को अच्छा लगता है।

किसी माँ-बाप को 10 बच्चे हों। छोटा बच्चा ज़्यादा हरकती होता है या बड़ा बच्चा? 'छोटा सो खोटा'। ये परंपरा कहाँ से पड़ी? ये परंपरा भी संगमयुग से पड़ती है। भगवान बाप इस सृष्टि पर जिन दस धर्मपिताओं वाली आत्माओं को संसार में प्रत्यक्ष करते हैं, बड़े बच्चों (ग्रेट फादर्स) के रूप में, वो दसों बच्चे नम्बरवार जन्म लेते होंगे या छोटा बच्चा पहले पैदा होता होगा? नंबरवार होते हैं। पहले सूर्यवंशी बच्चों का बाप, जिसे कहा जाता है- अल्लाह अव्वलदीन। वो अल्लाह ऊँचे-ते-ऊँचा पार्ट बजाने वाला पार्टधारी, जो अव्वल नंबर दीन माना धर्म की स्थापना करता है। कैसा धर्म? (सभी ने कहा- अव्वल धर्म) अव्वल नंबर धर्म सूर्यवंशी, फिर कौन? चन्द्रवंशी, चन्द्रमा की औलाद। उस ज्ञान-चंद्रमा की फर्स्टक्लास औलाद कौन-सी आत्मा है? बताओ। वो ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा चंद्र है ना! तो

चन्द्रवंश की फर्स्टक्लास औलाद कौन-सी आत्मा है? लक्ष्मी। अव्वल नंबर बच्चा तो सूर्यवंशी। द्वयम नंबर बच्चा चन्द्रवंशी। तो कोई ज़रूरी है कि जो दूसरे नंबर का बच्चा है, वो बच्चे के रूप में ही जन्म लें या बच्ची के रूप में जन्म लें? किस रूप में जन्म लें? अरे, चन्द्रमा के समान पार्ट बजाने वाली होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? चन्द्रमा शीतल होता है या सूर्य शीतल होता है? चन्द्रमा शीतल होता है। ज्ञान-चन्द्रमा शीतल कहो, चाहे सीता कहो, सीता माने 'शीतल', एक ही जैसे तो हुए ना! तो वो जो आत्मा है, जिसे सीता के रूप में कहा गया है कि तुम सब सीताएँ हो, तो कोई अव्वल नंबर भी होगी कि नहीं? ''तुम सभी सीताएँ हो ना? राम है एक।'' (मु.ता.26.10.69 पृ.2 आदि) तो जब तुम सब सीताएँ हो, उन सीताओं में जो अव्वल नंबर शीतल स्वभाव वाली है, वो सीता का पार्ट बजाने वाली आत्मा विष्णु पार्टधारी है या नहीं है? विष्णु पार्टधारी तो है। विष्णु पार्टधारी में चार पार्ट दिखाए हैं। पुराने त्रिमूर्ति चित्र में विष्णु के नीचे उनके नाम भी लिखे हुए हैं, जो त्रिमूर्ति का चित्र बाबा ने साक्षात्कार से तैयार कराया था। कौन-कौन-सी चार आत्माओं के नाम लिए हैं? (किसी ने कहा- ओमराधे...) अरे, विष्णु के चित्र के नीचे नाम लिखे हुए हैं। (किसी ने कहा- राम-सीता, राधा और कृष्ण) राधा-कृष्ण नहीं, लक्ष्मी-नारायण और राम-सीता। तो चारों आत्माओं के संस्कार जब मिलकर एक हो जाते हैं तब विष्णु कहा जाता है। राम, सीता, लक्ष्मी, नारायण। उनमें अव्वल नंबर सीता एक होगी या चारों होंगी? वो कौन? लक्ष्मी। बोला है- सतयुग में जो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, वो ही त्रेता में राम-सीता बनते हैं। "हम सो ल.ना. बनते हैं। हम सो राम-सीता बनेंगे।" (मु.ता.25.5.72 पृ.3 मध्यांत) तो वास्तव में, एकदम सतयुग आदि से ले करके बिल्कुल सतयुग अंत तक कितनी पीढ़ियाँ हुईं? नौ पीढ़ियाँ हुईं। एक स्वर्णिम संगमयुग की, जहाँ से राजधानी स्थापन होती है। संवत् का नाम पड़ता है- संवत् 1-1-1। राजधानी स्थापना का संवत् पड़ गया। तो वहाँ महारानी कौन बनती है? नारी से डाइरैक्ट लक्ष्मी बनती है। वो ही अव्वल नंबर की सीता हो गई। अव्वल नंबर की सीता हुई तो फिर चन्द्रवंश की है या सूर्यवंश की है? (किसी ने कहा- चन्द्रवंश की) कहाँ से आती है? ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा के चन्द्रवंश से आती है। जिस ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा ने सहनशीलता का इतना पार्ट बजाया, उसकी बच्ची हुई या नहीं हुई? (किसी ने कहा-हुई) जन्म लिया या नहीं लिया? (किसी ने कहा- लिया) पालना ली या नहीं ली? (किसी ने कहा-ली) इस जन्म में जन्म लिया या पिछले जन्म में जन्म लिया? (किसी ने कहा- इस जन्म में) इस जन्म में जन्म लिया और पिछले जन्म में? पिछले जन्म में वो आत्मा ने जन्म दिया या लिया? (किसी ने कहा- दिया) किसको जन्म दिया? (किसी ने कहा-कृष्ण वाली आत्मा ब्रह्मा को) क्योंकि यहाँ शूटिग करेगी तो 5000 वर्ष के ब्रॉड ड्रामा में भी वो ही शूटिग रिपीट होगी। यहाँ ज्ञान के आधार पर जन्म दिया, ब्रह्मा की बुद्धि में बैठा कि मैं 16 कला सं. कृष्ण की आत्मा हूँ। इस जन्म में मेरे को सफेदपोशधारी ब्रह्मा का पार्ट बजाना है। इस पुरानी दुनिया का विनाश

होने वाला है और नई दुनिया आने वाली है। मेरे साक्षात्कारों का यही अर्थ सही है। पक्का -2 बुद्धि में बैठ गया और मृत्युपर्यन्त तक बैठा रहा या नहीं बैठा रहा? (सभी ने कहा- बैठा रहा) तो 'अंत मते सो गते'। जब इस दुनिया में नई दुनिया बनेगी, तो पहले-2 जन्म में कृष्ण का जन्म होगा या नहीं होगा? होगा। तो ये बुद्धि में बैठाने वाली आत्मा कौन थी- लक्ष्मी वाली आत्मा थी या जगदम्बा वाली आत्मा थी? (किसी ने कहा- लक्ष्मी वाली) हाँ, कैसे? शिव ने दादा लेखराज ब्रह्मा को, जिसका नाम 'ब्रह्मा' पड़ा, उनको साक्षात्कार कराए। साक्षात्कार का मतलब ये नहीं है कि प्रवेश किया। प्रवेश करना अलग बात और साक्षात्कार अलग बात। सूरदास, तुलसीदास, रैदास, मीरा को साक्षात्कार हुए। क्या भगवान ने प्रवेश कर लिया? नहीं! तो ब्रह्मा को साक्षात्कार हुए। वो (सा.की बात) उनको कोई नहीं समझा सका, उनका गुरु भी नहीं समझा सका, बनारस के बड़े-2 पंडित-विद्वान भी नहीं समझा सके। प्रैक्टिकल जो व्यक्ति बहुत समझदार तो उनकी बुद्धि में बैठा हुआ था, (किसी ने कहा- भागीदार) वो दिमाग में आ गया। जिस व्यक्ति को उन्होंने 10 साल पहले, सन् 1936 से भी 10 साल पहले माना 1926 से अपनी दुकान का मैनेजर बनाया हुआ था। ''10 वर्ष से (साथ में) रहने वाला और ध्यान में जाती थी।'' (मु.ता.23.7.69 पृ.2 अंत) उसी व्यक्ति के पास कलकत्ते में पहुँचे। उनकी हिम्मत नहीं हुई- ऐसे बुद्धिवादी आदमी के सामने अपनी सा. की बात को रखना; क्योंकि वो तो स्वप्न/साक्षात्कार को मानने वाली आत्मा नहीं है। बुद्धिवादी है या भावनावादी है? (सभी ने कहा- बुद्धिवादी है) बुद्धिमान बाप के बच्चे भी बुद्धिमान होंगे, बिना प्रूफ और प्रमाण के कोई बात मानने के लिए तैयार नहीं होंगे। कोई कहे- हमने सपने में

ये देखा, वो देखा। सपने में हम पूर्वजन्म में राजा थे। हमने देखा कि अगले जन्म में भी शरीर को छोड़ करके हम महाराजा बनने वाले हैं। तो बुद्धिवादी आत्मा मानेगी? नहीं। हम बच्चों के लिए भी बाबा ने यही बोला- "बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिए तैयार नहीं होते।" (अ.वा. 28.4.74 पृ.34 अंत) तो देखो, जो गीता में भी बुद्धिमान बच्चों में सबसे बड़ा बुद्धिमान गाया हुआ है; अरे गीता छप गई, अर्थ भी छप गए! यज्ञ के आदि में भी गीता के श्लोकों का ही अर्थ करके सुनाते थे। जो आदि में सो अंत में भी होगा। इस दुनिया के बड़े-2 विद्वान, पण्डित, आचार्य और ज़हीन लोग जो हैं, बुद्धिवादी लोग हैं, उनकी शास्त्रों के ऊपर इतनी श्रद्धा बैठी हुई है कि उनको शास्त्रों के आधार पर समझाएँगे तब समझेंगे या जो मुरलियों की बातें सुनाएँगे- बाबा ने ऐसे बोला, वैसे बोला, तो मानेंगे? नहीं मानेंगे। तो क्या करना पड़े? (सभी ने कहा- शास्त्रों के आधार पर समझाना पड़े) दुनिया के हर धर्म में जो मान्यताप्राप्त ग्रंथ है, वो कौन-सा है? गीता। तो गीता को ही ले करके हम कोई भी व्यक्तियों को समझा सकते हैं। गीता में जो बातें आई हैं उनके आधार पर समझाएँ। गीता हमारा (भारतीय) ग्रंथ है, सभी धर्मग्रंथों का माई-बाप है, सर्वोपरि है। दुनिया में एक ही ग्रंथ है,

एक ही शास्त्र है, जिसके ऊपर लिखा रहता है- 'श्रीमत् भगवत् गीता।' कैसी गीता? (सभी ने कहा- श्रीमत्भगवत्गीता) श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ की मत/बुद्धि/अक्ल है उसमें और जो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ है, वो है भगवान। तो भगवत् गीता। उस भगवान की गीता है। उस गीता को हम रेफ़र करना ज़रूर सीख लें; क्योंकि आगे आने वाली जो दुनिया है, उसमें सब धंधों में चौपटा हो जाएगा। क्या बोला है? सब धंधों में है नुकसान, सिवाय एक ईश्वरीय धन्धे के। "सभी धंधों में है नुकसान, बिगर अविनाशी ज्ञान-रत्नों के धंधे के।" (मु.ता.2.12.68 पृ.1 अंत) तो नुकसान ही उठाते रहना है? खुश रहेंगे फिर? (किसी ने कहा- नहीं) दुनियावी धंधे करते-2 नुकसान उठाते रहेंगे तो आत्मा खुश रहेगी? ज्ञान में चलते-2 मौज में रहेंगे। मौज में नहीं रह सकते? और यहाँ शूटिग पीरियड में मौज में नहीं रहेंगे तो 5000 वर्ष में भी क्या हो जाएगा? हम सतयुग-त्रेता में भी उतना ऊँचा पद के मौज में नहीं रहेंगे, उतना ल.ना. जैसा । और द्वापर-कलियुग में तो दुख होता ही है, वहाँ तो दुखी हो ही जाएँगे फिर; क्योंकि 21 जन्मों (की शूटिग) के आधार पर 63 जन्मों का भी हिसाब-किताब बन जाता है। इसलिए गाँठ बाँध लेनी है, खास करके भारतवासियों को और भारतवासियों में भी खास करके उत्तर भारत वालों को और उत्तर भारत वालों में भी हम कहाँ के रहने वाले हैं? (किसी ने कहा-राजस्थान) राजाओं का स्थान। ऐसे राजाएँ जहाँ ज़्यादा तादाद में (सूर्यवंशी ही) तैयार हुए हैं, जिन्होंने भगवान से राजयोग सीख करके जन्म-जन्मांतर की राजाई प्राप्त की है। ऐसी राजाई प्राप्त की है, पावरफुल राजाइयाँ प्राप्त की हैं कि दुनिया के बड़े-ते-बड़े कहे जाने वाले हैं; जैसे मुसलमान कहते हैं- अल्लाह हो अकबर। अल्लाह के बाद नेक्स्ट टू गॉड किसे मानते हैं? अकबर। वो अकबर, जो दुनिया को दिखा देता है कि हिदुस्तान में सबसे बड़ा बादशाह हुआ और 'अकबर महान' का टाइटिल ले करके बैठा हुआ है। हिस्ट्री में अशोक की तरह, 'अशोक महान' वो तो द्वापर युग में था; लेकिन कलियुग में महान कौन? हिस्ट्री में गाया हुआ है- ऐसा महान कहा जाने वाली शख़्सियत राजस्थान में आ करके हार करके गया, मुँह काला करके गया। तो देखो, राजस्थान के लोगों को तो कितना फखुर होना चाहिए! ये फखुर कब बढ़ेगा? दुनियावी धंधों में बुद्धि लगी रहेगी तब? नहीं, कौन-सा धंधा करें? (सभी ने कहा- ईश्वरीय धंधा) हाँ, ईश्वरीय धंधा करें। कितना सहज कर दिया है बाबा ने कि जो सरेण्डर्ड हैं, वो 16 घंटे सेवा करें तब उनको राजाई घराने में वो पद मिलेगा। यहाँ इस क्लास में जो भी बैठे हैं, किसकी संख्या ज़्यादा है- सरेण्डर्ड की या नॉन सरेण्डर्ड की? नॉन सरेण्डर्ड की। तो उनको क्या फखुर होना चाहिए- हमें कितनी सेवा करनी है? (सभी ने कहा- आठ घंटे) अगर 24 घंटे में से आठ ही घंटे सेवा करके दिखा देंगे, "बाप कहते हैं घर वाले इतना उठा न सकेंगे जितना कि बाहर (की दुनियाँ) वाले। कहा जाता है घर की गंगा को मान नहीं देते।" (मु॰3.8.68 पृ॰3 मध्यादि) क्यों? अभी तो हम अंदर बैठे हैं, थोड़ी देर बाद क्या होगा? बाहर भाग जाएँगे। तो बाहर वाले हुए या अंदर वाले हुए? (किसी ने कहा- बाहर

वाले) मधुबन के अंदर हुए? मधुबन जो मधुसूदन का घर कहा जाता है, अंदर के हुए या बाहर के हुए? बाहर के हैं; लेकिन फिर भी प्रिफरेन्स मिला हुआ है, क्या प्रिफरेन्स? (किसी ने कहा- बाहर वाले ले जाएँगे) अंदर वाले रह जाएँगे; क्योंकि 16 घंटे दत्तचित हो करके प्यार से वो सेवा नहीं करते हैं; करते भी हैं तो बुद्धि बाहर की दुनिया में रही पड़ी है। तो भगवान के प्यारे हैं या दुनिया के प्यारे हैं? (किसी ने कहा- दुनिया के) बुद्धि बाहर रखी हुई है, रहते हैं बाबा के घर में, खाते हैं बाबा के घर में, पहनते हैं बाबा के घर का कपड़ा, वातावरण लेते हैं बाबा के घर का, फिर अंजाम क्या होगा? राजाई पाएँगे? राजाई नहीं मिल सकती। वो ही हाल होना है जो बेसिक ज्ञान में बेसिक नॉलेज लेते समय ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्माकुमार-कुमारियों का हो गया। वहाँ भी अंदर वाले सरेण्डर्ड हैण्ड थे और यहाँ भी अंदर वाले सरेण्डर्ड हैण्ड्स हैं। वहाँ बताया कि 1976 में टू-लेट का बोर्ड लग जाएगा। कौन-सा टू-लेट? हमारा लक्ष्य क्या बताया था? नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी। 1976 में टू-लेट का बोर्ड लगेगा, नारायण और लक्ष्मी का पद डिक्लेयर हो जाएगा, फिर उसके बाद लक्ष्मी-नारायण का पद ग्रहण कर सकेंगे? नहीं कर सकेंगे। जो ग्रहण करेंगे वो (ब्रह्मा-सरस्वती) तो शरीर छोड़ गए; कि हैं इस दुनिया में? तो देखो, टू-लेट का बोर्ड लग गया।

अभी फिर टू-लेट का बोर्ड लगने वाला है। पहले दो के लिए लगा, अभी आठ के लिए लगेगा। जो आठ मणके भगवान (शिव) के सर के ऊपर विराजमान रहते हैं। वो कौन-से मणके हैं? (सभी ने कहा- अष्टदेव) रुद्रमाला के मणके। भगवान उन्हें सर पर धारण करता है माना अपने से भी ऊँच बनाता है। कैसे ऊँच बनाता है? कहता है कि तुम बच्चे त्रिलोकीनाथ बनते हो। कहाँ के नाथ बनते हो? तीनों लोकों के नाथ नम्बरवार। मैं तो सिर्फ कहाँ का नाथ हूँ? (किसी ने कहा- परमधाम का) आत्माओं के लोक का नाथ हूँ। तुम त्रिलोकीनाथ हो, माना वहाँ भी सब धर्मों के बीच में ऊँची स्टेज होगी। कहाँ? परमधाम में। तुम्हारे मुकाबले और सब धर्म की आत्माएँ, धर्मपिताएँ नीची स्टेज वाले होंगे और तुम ऊँची स्टेज में होंगे और जब यहाँ इस सृष्टि में आओगे तो भी देवलोक में होंगे। सुखधाम में होंगे या नहीं होंगे? सुखधाम में भी तो सुख-ही-सुख होगा। सुखधाम के बाद जब दुखधाम (की) ये सृष्टि बनेगी तो दुखधाम में भी तुम ज़्यादा सुख भोगेंगे या दुनिया के दूसरे धर्म वाले हैं वो ज्यादा सुख भोगेंगे? (किसी ने कहा- हम ज़्यादा भोगेंगे) "बाप समझाते हैं 3/4 से भी जास्ती तुम सुख भोगते हो।" (मु.ता.3.6.69 पृ.2 मध्य) पक्के देवी-देवता सनातन धर्म वाले जो 16 कला संपूर्ण बनते हैं। और दूसरे धर्म वाले आधा सुख, आधा दुख भोगते हैं। तुम बच्चों में भी, मुरली में बोला- कोई-2 बच्चे ऐसे भी हैं जो 82-83 जन्म भी सुख में रहते हैं। ये पार्शलिटी क्यों? उनको ऐसा जीवन्मुक्ति का वर्सा क्यों दे दिया? भगवान पार्शलिटी करता है ना! (सभी ने कहा- नहीं करता) क्यों नहीं करता? (सभी ने कहा- पुरुषार्थ के आधार पर पद मिलता है।) हाँ, भगवान तो आकर पढ़ाई

पढ़ाता है। टीचर पढ़ाई पढ़ाता है, पढ़ने वाले बच्चों में कोई (बहुत थोड़े) पास विद् ऑनर बन जाते हैं, ढेर सारे फेल हो जाते हैं। तो क्या कहेंगे- टीचर ने पार्शलिटी की? पार्शलिटी तो नहीं की। यहाँ तो भगवान आ करके राजयोग की पढ़ाई पढ़ा रहा है, पढ़ाई से राजा बनाता है। जो इस राजयोग की पढ़ाई को, पेट का धंधा, पेट की जो चिता रहती है ना, वो सारी चिन्ताएँ छोड़ करके ईश्वर की सेवा में ही लग जाता है, तो भगवान बाप ऐसे बच्चे को, जो बच्चा सबसे जास्ती टाइम दे करके भगवान की दुकान संभालता है, उसको वर्सा नहीं सौंपेगा? (सभी ने कहा-सौंपेगा) तो बाप कहते हैं, क्या कहते हैं उन बच्चों के लिए? मुरली में बोला है कि स्वर्ग की दुनिया मेरी है तो नरक की दुनिया मेरी नहीं है क्या? "बाप की ही सारी दुनियाँ है, नई वा पुरानी। नई बाप की है तो पुरानी नहीं है क्या? बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनियाँ भी मेरी ही है। सारी दुनियाँ का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनियाँ (सतयुग) में राज्य नहीं करता हूँ; परंतु है तो मेरी ना!" (मु.ता.14.6.68 पृ.1 आदि) बताओ, किसके लिए बोला होगा? आठ बच्चे हैं जो शिवबाबा के सर के ऊपर बैठे, शिवबाबा जिनको नमस्ते करता है- तुम बच्चों को नमन! यहाँ भी नमन करता है वाचा से और जब वर्सा देता है तो भी सर माथे पर रखता है। उन बच्चों के लिए बोला है कि स्वर्ग की दुनिया मेरी है तो नरक की दुनिया में भी वो आत्माएँ ऐसा पार्ट बजाती हैं कि किसी के सामने झुक करके नहीं रहतीं। ऐसा क्या कारण हुआ कि वो आत्माएँ दुखधाम में भी सरताज बनकर रहती हैं? (किसी ने कहा- बाप की पहचान) (किसी ने कहा- नहीं, पुरुषार्थ के आधार पर ही ऐसे संस्कार आते हैं।) हाँ, श्रीमत के आधार पर, बाप को पहचान करके, बाप ने जो काम दिया है उस काम में बुद्धि को लगाना। ब्राह्मणों का धंधा क्या है? ज्ञान लेना है और ज्ञान देना है। ये ही मुख्य धंधा है।

तो भगवान बाप के हम सब बच्चे हैं। अभी यहाँ बैठे हैं, वातावरण में बैठे हैं, तो उमंग-उत्साह आता है- हम ज़रूर ऐसा पुरुषार्थ करें! फिर बाहर की दुनिया में गए, 'गंगा गए गंगानाथ, जमुना गए जमुनानाथ।' तो दृढ़ता क्या धारण करनी है? क्या धारणा धारण करनी है? ये शरीर रूपी धनुष है, कैसा बनाना है? एकदम ऐसा लचीला (पुरुषार्थी) बनाना है, इस दुनिया में चाहे जैसी परिस्थिति आ जाए; लेकिन हम हिलने वाले नहीं हैं। हम वैसा ही लचीला पुरुषार्थ करके दिखाएँ जैसा भगवान बाप हमसे चाहते हैं। क्या चाहते हैं? भगवान बाप हमसे चाहते हैं, चैलेंज देते हैं, बापदादा ने जो बोला हुआ है- "राख कौन बनते हैं और कितने बनते हैं और कोटों में से, लाखों में से एक कौन निकलते हैं, वह भी देखेंगे।"' (अ.वा. 23.9.73 पृ.161 आदि) अपने देहभान को क्या बना दें? राख बना दें। ओम् शान्ति।

**Contact Us**
**Address**
A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085
**Mobile -** 9891370007, 9311161007
**Email -** a11spiritual1@gmail.com
**Website** – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM
**Youtube** – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV
@A1SPIRITUALUNIVERSITY
**Twitter -** @adhyatmikaivv
**Instagram -** @adhyatmikvidyalaya
**Linkedin** – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

---

01.01.2025